

डॉ. गैरी येट्स, बुक ऑफ द 12, सत्र 29, जोएल

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी शिक्षा है। यह योएल की पुस्तक पर सत्र 29 है।

यह सत्र योएल की पुस्तक के संदेश, सेटिंग, निहितार्थों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने वाला है।

12वीं पुस्तक में जोएल मेरी पसंदीदा पुस्तकों में से एक है। इस सब के बारे में आपके मन में तुरंत एक सवाल उठ सकता है। हम जोएल को निर्वासन के बाद के भविष्यवक्ताओं में क्यों देख रहे हैं, जबकि वास्तव में, जब हम 12वीं पुस्तक के क्रम और व्यवस्था को देखते हैं, तो जोएल वहाँ सूचीबद्ध दूसरी पुस्तक है और ऐसा लगता है कि वह असीरियन भविष्यवक्ताओं में सूचीबद्ध है।

यहाँ मुद्दा और समस्या का एक हिस्सा यह है कि योएल की पुस्तक की तिथि निर्धारित करना बहुत कठिन है, और यह कुछ ऐसा है जिस पर विद्वानों ने खुद बहस की है, और पुस्तक को कई अलग-अलग सेटिंग्स में रखा गया है, और तिथि इज़राइल के इतिहास में कई अलग-अलग अवधियों में दी गई है। 12 की पुस्तक में इस पुस्तक के स्थान और व्यवस्था के आधार पर, पहले के विद्वानों ने इसे बहुत पहले की तिथि माना, और कुछ व्याख्याकारों ने इसे 9वीं शताब्दी ईसा पूर्व की तिथि भी दी है। अगर ऐसा होता, तो यह वास्तव में छोटे भविष्यवक्ताओं में सबसे प्रारंभिक होता।

कुछ लोगों ने इसे असीरियन आक्रमण से ठीक पहले का बताया है। कुछ लोगों ने इसे बेबीलोन के आक्रमण से ठीक पहले का बताया है। मुझे लगता है कि ये दोनों ही संभावनाएँ बहुत वास्तविक हैं।

यह पुस्तक प्रभु के आने वाले दिन के बारे में चेतावनी है। यह लोगों पर आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी है। मैंने हाल ही में एक लेख पढ़ा था जिसमें कहा गया था कि यह पुस्तक निर्वासन या निर्वासन के बाद के शुरुआती दौर में लिखी गई थी।

लेकिन हाल ही में चलन, और मुझे लगता है कि हाल ही में आम सहमति यह है कि हमें जोएल की पुस्तक को निर्वासन के बाद के काल में रखना चाहिए और इसे 6वीं शताब्दी के अंत या 5वीं शताब्दी की शुरुआत में कहीं रखना चाहिए। इसमें संघर्ष है, और हम पूरी तरह से पहचान नहीं कर सकते हैं या स्पष्ट रूप से नहीं बता सकते हैं कि यह निश्चित समय है जब जोएल की पुस्तक लिखी गई थी। लेकिन कई चीजें हैं जो हमें निर्वासन के बाद के काल में रखने की ओर ले जाती हैं।

योएल का उल्लेख पुस्तक के बाहर नहीं किया गया है। हम उसके बारे में अन्य ऐतिहासिक अभिलेखों या पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकों से नहीं जानते हैं, जैसे कि हम भविष्यवक्ता योएल या कुछ अन्य भविष्यवक्ताओं के बारे में जानते हैं। यहाँ भविष्यवक्ता की सेवकाई की समय अवधि की पहचान करने वाला कोई ऐतिहासिक उपरिलेख नहीं है।

पुस्तक की वास्तविक ऐतिहासिक सेटिंग या घटनाओं या व्यक्तियों के बारे में स्पष्ट कथनों का अभाव है जो योएल के अपने मंत्रालय को पूरा करने के दौरान मौजूद रहे होंगे। हालाँकि, कुछ चीजें हैं जो पुस्तक के लिए निर्वासन के बाद की सेटिंग के विचार का समर्थन करती हैं। अध्याय 3, श्लोक 2 से 3 में, हमारे पास यह कथन है।

मैं सभी जातियों को इकट्ठा करूँगा, और उन्हें यहोशापात की घाटी में ले जाऊँगा, और वहाँ मैं अपने लोगों और अपनी विरासत इस्राएल के पक्ष में उनके साथ न्याय करूँगा, क्योंकि उन्होंने उन्हें जातियों में तितर-बितर कर दिया है और मेरी भूमि को बाँट दिया है। उन्होंने मेरे लोगों के लिए चिट्ठियाँ डाली हैं और एक लड़के को वेश्या के लिए बेच दिया है और एक लड़की को शराब के लिए बेच दिया है और उसे पी लिया है। इस्राएल के लोग बिखर गए हैं।

उन्हें निर्वासित कर दिया गया है। यह निर्वासन के बाद की अवधि के साथ मेल खाता प्रतीत होता है। हालाँकि अन्य लोगों ने तर्क दिया है कि शायद यह असीरियन आक्रमण और दक्षिणी राज्य के बजाय उत्तरी राज्य के असीरियन निर्वासन से संबंधित है।

सोर और सीदोन और फिलिस्तिया के नेताओं ने इस्राएल या यहूदा के लोगों को गुलामी में बेच दिया है। इसमें कहा गया है कि तुमने यहूदा और यरूशलेम के लोगों को यूनानियों के हाथों बेच दिया है ताकि उन्हें उनकी अपनी सीमा से दूर ले जाया जा सके। वहाँ यूनानियों का संदर्भ इस विचार का समर्थन कर सकता है कि योएल की सेवकाई निर्वासन के बाद की अवधि के संदर्भ में है।

हालाँकि, असीरियन इतिहास और शिलालेखों में यूनानियों का भी उल्लेख मिलता है। वे पहले के समय में सीरिया और फिलिस्तीन के लोगों के साथ जुड़े हुए थे। हम वास्तव में सीरिया और फिलिस्तीन और ग्रीक लोगों के बीच हुए दास व्यापार के बारे में ज़्यादा नहीं जानते हैं।

यह पहले की अवधि का संदर्भ हो सकता है। यूनानियों के संदर्भ के बजाय, यह केवल यूनानी-भाषी लोगों का संदर्भ हो सकता है। यह जेकेल अध्याय 26 आयत 12 और 13 में, हमें यावान और सोर, यूनानियों और सोर के बीच दास व्यापार का संदर्भ मिलता है, और यह 6वीं शताब्दी से शुरू होता है।

इसलिए, यूनानियों का यह संदर्भ भी वास्तव में बहुत निर्णायक नहीं है। निर्वासन के बाद की स्थिति का समर्थन करने वाला तीसरा सबूत यह है कि हमारे पास न तो इज़राइल में और न ही यहूदा में किसी राजा का कोई संदर्भ है और न ही उसका कोई उल्लेख है। अगर हम असीरियन संकट से ठीक पहले या बेबीलोनियन संकट से ठीक पहले इसके बारे में बात करते हैं तो यह अजीब लगता है, लेकिन किताब इतनी संक्षिप्त है कि हम शायद वहाँ कोई संदर्भ देखने की उम्मीद न करें।

तो, इन सभी कारणों से, जोएल, सबसे संभावित तिथि निर्वासन के बाद की अवधि लगती है, लेकिन ये अन्य संभावनाएँ निश्चित रूप से मौजूद हैं। अभयारण्य का संदर्भ है। अभयारण्य खड़ा है।

लोगों को वहाँ इकट्ठा होने और प्रभु की वेदी के सामने आने के लिए बुलाया जाता है। यदि योएल निर्वासन के बाद की पुस्तक है, तो इसका मतलब है कि यह 515 ईसा पूर्व के बाद की है, वह समय जब लोगों ने वास्तव में मंदिर का निर्माण पूरा किया था। अध्याय 1, श्लोक 14, अध्याय 1, श्लोक 16, अध्याय 2 और श्लोक 17 में अभयारण्य के संदर्भ हैं, और एक पवित्र सभा के लिए यह आह्वान है।

इसलिए, अगर जोएल निर्वासन के बाद की किताब है, और मैं इसे इसी तरह से देखूंगा और इससे निपटूंगा, तो जोएल का मंत्रालय 515 ईसा पूर्व में मंदिर के पुनर्निर्माण के बाद किया गया था। इसके अलावा, हम इससे ज़्यादा निश्चित नहीं हो सकते। मुझे नहीं लगता कि आखिरकार, इससे किताब के संदेश में कोई खास बदलाव आता है, चाहे हम इसे निर्वासन से पहले पढ़ें या निर्वासन के बाद।

लेकिन आम सहमति यह है कि यह निर्वासन के बाद की किताब है। इसलिए, इस बात को ध्यान में रखते हुए, आइए थोड़ा विचार करें और निर्वासन के बाद के काल के इतिहास की थोड़ी समीक्षा करें। याद रखें कि साइरस के आदेश और बेबीलोनियों से फारसियों को सत्ता के हस्तांतरण के परिणामस्वरूप लोग 538 और 537 ईसा पूर्व में भूमि पर वापस आए।

वापसी तीन चरणों में होने जा रही है। पहली वापसी का नेतृत्व जरुब्बाबेल और यहोशू करेंगे। वे अंततः हागै और जकर्याह की सेवकाई और प्रोत्साहन के माध्यम से मंदिर का पुनर्निर्माण करेंगे, 520 से 515 तक।

योएल की सेवकाई उसके बाद आती है। दूसरी वापसी एज्रा के अधीन 458 ई.पू. में हुई। फिर तीसरी वापसी नहेमायाह के अधीन 445 ई.पू. में हुई।

हम यहाँ बस थोड़ा सा अनुमान लगाने जा रहे हैं और जोएल की सेवकाई को या तो मंदिर के निर्माण के बाद छठी शताब्दी के अंत में या एज्रा और नहेम्याह के अधीन दूसरी वापसी से पहले 5वीं शताब्दी की शुरुआत में मान रहे हैं। अब, वह प्रभु के दिन के आने और इस तथ्य के बारे में बात करता है कि यहूदा के लोगों पर टिड्डियों की महामारी आई है, और यह भूमि पर विनाशकारी रही है। लेकिन वह यह भी बात करता है कि एक दुश्मन सेना है जो परमेश्वर की ओर से दंड के रूप में यहूदा पर आक्रमण करने जा रही है।

यह प्रभु का दिन होने जा रहा है। प्रभु का दिन आ रहा है। आपको इसके लिए तैयारी करनी होगी।

आपको पश्चाताप करने की आवश्यकता है। आपको परमेश्वर के साथ सही संबंध बनाने की आवश्यकता है अन्यथा संभावना है कि परमेश्वर और अधिक न्याय लाएगा। 490 ईसा पूर्व में हमारे पास इतिहास की एक बहुत ही महत्वपूर्ण लड़ाई है।

हमारे पास मैराथन में फारसियों और यूनानियों के बीच लड़ाई है। वास्तव में आपके पास पश्चिम और पूर्व के बीच चल रहा एक विशाल संघर्ष है। यदि जोएल दुश्मन सेना के आक्रमण की

संभावना के बारे में चेतावनी दे रहा है, तो मुझे आश्चर्य है कि क्या यह किसी तरह 490 ईसा पूर्व में हुए इस बड़े संघर्ष के संबंध में फारसियों या यूनानियों की गतिविधियों से जुड़ा हो सकता है।

तो, सामान्य विचार और मूल समयरेखा जो हम इसके लिए लेने जा रहे हैं वह यह है कि योएल का मंत्रालय लगभग 500 ईसा पूर्व में हुआ था। मंदिर के पुनर्निर्माण के बाद, लोगों के देश में लौटने के बाद, और एक तरह से, पश्चाताप होता है; 520 के वर्षों में एक आध्यात्मिक पुनरुद्धार होता है जहाँ लोग खुद को प्रभु के प्रति फिर से समर्पित करते हैं। वे हागै और जकर्याह के उपदेशों का जवाब देते हैं और फिर भी पश्चाताप पूरा नहीं होता है।

जब हम योएल की सेवकाई पर आते हैं, तब लोग दूसरी परिस्थिति में वापस आ जाते हैं जहाँ उन्हें परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ता है। योशिया के समय की तरह ही जब यह पुनरुत्थान होता है, तो शुद्ध उपासना की ओर वापसी होती है और परमेश्वर योशिया को आशीर्वाद देता है और लोग न्याय से बच जाते हैं। याद रखें कि लोगों को अपने मूर्तिपूजक तरीकों पर वापस जाने में बहुत समय नहीं लगता है।

फिर अंततः निर्वासन होने जा रहा है और यरूशलेम 586 में नष्ट होने जा रहा है। हम निर्वासन के प्रकाश में सोचते हैं कि लोगों को अंततः प्रभु के प्रति वफ़ादारी पर उनकी वाचा की गंभीरता का एहसास होगा। अगर कोई चीज़ उनके पाप और उनके विद्रोह और वफ़ादारी पर उनकी वाचा को ठीक कर सकती है, तो आपको लगता है कि वह निर्वासन होगा।

फिर भी जब वे वापस देश में आते हैं, तो वे एक तरह से प्रभु से दूर हो जाते हैं। वे तुरंत मंदिर का पुनर्निर्माण नहीं करते और जकर्याह और हागै को उन्हें वापस वफ़ादारी के लिए बुलाना पड़ता है। वे थोड़े समय के लिए वफ़ादार रहते हैं और फिर उतार-चढ़ाव जारी रहता है।

योएल के समय तक, हम फिर से एक ऐसी जगह को देख रहे हैं जहाँ परमेश्वर लोगों को आने वाले न्याय की याद दिलाने के लिए एक भविष्यवक्ता का उपयोग कर रहा है। यहाँ जो न्याय हुआ है, वे पहले से ही कुछ अर्थों में वाचा के अभिशापों का अनुभव करना शुरू कर चुके हैं। यहूदा पर आने वाला आगे का न्याय यह है कि परमेश्वर प्रभु के दिन का एक और प्रकटीकरण लाने जा रहा है।

अपने हाल के इतिहास में, उन्होंने एक विनाशकारी टिड्डे की महामारी का अनुभव किया है। इसने भूमि को नष्ट कर दिया है और परमेश्वर ने इसका उपयोग लोगों को यह याद दिलाने के लिए किया है कि वे वफ़ादार नहीं हैं। जिस तरह से उन्होंने निर्वासन से पहले वाचा के अभिशापों का अनुभव किया था, उसी तरह वे उस स्थान पर वापस आ गए हैं जहाँ वे एक बार फिर वाचा के अभिशापों का अनुभव कर रहे हैं।

योएल का संदेश है, अगर आपको लगता है कि टिड्डियों का प्रकोप जो आपने अभी-अभी अनुभव किया है, वह बुरा है, तो परमेश्वर के आने वाले कार्य की प्रतीक्षा करें क्योंकि प्रभु का दिन आ रहा है। कई मायनों में, योएल का संदेश सपन्याह के संदेश के बहुत करीब है जिसे हम पहले ही देख चुके हैं। योएल, भले ही यह संभवतः बारह की पुस्तक में नवीनतम पुस्तकों में से एक है, लेकिन इसे बारह की पुस्तक में सबसे आगे रखने का कारण यह है कि इस पुस्तक में पेश किए गए विशिष्ट विषयगत सरोकार और विचार बारह की पुस्तक में चलने वाले हैं।

योएल प्रभु के दिन के न्याय के बारे में बात करने जा रहा है। उस विषयवस्तु का उल्लेख ओबद्याह की पुस्तक में, आमोस की पुस्तक में, सपन्याह की पुस्तक में किया जाएगा। यह एक आवर्ती विषय होने जा रहा है।

इसलिए, विषयगत रूप से योएल को पुस्तक के आरंभ में और बारह की पुस्तक के आरंभ में रखा जा सकता है ताकि बारह के दिन पर इस जोर को उजागर किया जा सके और इस बात पर जोर दिया जा सके कि यह साहित्य अंत तक जारी रहेगा। अब यहूदा के लोगों के सामने प्रभु के दिन का एक और अनुभव है। आमोस ने कहा कि अशशूर आ रहे थे।

वह प्रभु का दिन है। सपन्याह कहता है कि बेबीलोन के लोग आ रहे हैं। वह प्रभु का दिन है।

जोएल अध्याय 2 में एक और दुश्मन सेना के बारे में चेतावनी दे रहा है। यह प्रभु का दिन है। इसलिए, जोएल को बारह की पुस्तक के आरंभ में रखा गया है क्योंकि यह उन चिंताओं का परिचय देता है।

निर्वासन के बाद के दौर में राष्ट्रीय संकट का एक और दौर है। लोगों ने अपना सबक नहीं सीखा है। वे अपने पापी रास्ते पर वापस लौट गए हैं।

यह तथ्य कि वे वापस देश में आ गए हैं, इस संभावना को नकारता नहीं है कि परमेश्वर निकट भविष्य में उन्हें आगे के न्याय के लिए यहाँ ला सकता है। बारह की पुस्तक की शुरुआत में योएल को रखने के अन्य कारणों में से एक यह है कि यह हमें राष्ट्रीय पश्चाताप का एक आदर्श उदाहरण भी प्रदान करता है। योएल की सेवकाई की सकारात्मक बात यह है कि जब योएल उन्हें प्रभु के दिन और आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देता है, तो लोग इसे गंभीरता से लेते हैं।

हम अध्याय 2 में देखेंगे कि इस पुस्तक में योएल के संदेश के परिणामस्वरूप परमेश्वर की ओर मुड़ना प्रतीत होता है। उसके कारण, न्याय की चेतावनी और प्रभु के दिन की चेतावनी, कि न्याय टलने वाला है। आमोस ने चेतावनी दी कि प्रभु का दिन आ रहा है और न्याय टल नहीं गया।

सपन्याह ने चेतावनी दी कि प्रभु का दिन आ रहा है, और न्याय टाला नहीं जा सकता। योएल ने उस न्याय के बारे में चेतावनी दी जो परमेश्वर लाने जा रहा था। लोगों ने जवाब दिया।

वे परमेश्वर के साथ सही हो गए। बारह पुस्तकों की शुरुआत में, यह कहने के लिए रखा गया है कि परमेश्वर अपने लोगों से हमेशा यही चाहता था। फिर जब हम इन बारह पुस्तकों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, तो निराशा होती है, हमारे पास 400 साल का भविष्यवाणी इतिहास है और हमारे पास ऐसे समय के बहुत सीमित उदाहरण हैं जब लोग परमेश्वर के पास वापस आए।

इस कहानी की शुरुआत में, हम देखते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता था। योएल की किताब, इससे पहले वाली किताब से जुड़ती है। यह होशे से वापस जुड़ती है क्योंकि होशे पश्चाताप के आह्वान और प्रभु के पास लौटने के आह्वान के साथ समाप्त होता है।

जोएल लोगों को रोने, विलाप करने, पश्चाताप करने और परमेश्वर द्वारा उनके विरुद्ध लाए गए न्याय को समझने के लिए आह्वान के साथ शुरू होता है। जोएल की पुस्तक उसके बाद आने वाली अमोस की पुस्तक में जो कुछ भी है, उससे जुड़ती है क्योंकि यह परमेश्वर के शेर की तरह दहाड़ने, तूफान की तरह गरजने के बारे में बात करने जा रही है। यह वह परिचयात्मक संदेश होगा जो अमोस की पुस्तक में भी पाया जाता है।

बारह की पुस्तक में योएल का स्थान साहित्यिक और विषयगत प्रतीत होता है, इसके पीछे के कारण ऐतिहासिक और कालानुक्रमिक नहीं हैं। तो यह ऐतिहासिक सेटिंग है। एक टिड्डी महामारी हुई है, और आगे का न्याय परमेश्वर की ओर से आने वाला है और यह सब किसी तरह 515 ईसा पूर्व में मंदिर के पुनर्निर्माण और बाद में पांचवीं शताब्दी में एज्रा और नेहेमियाह के तहत दूसरे और तीसरे रिटर्न के बीच हुआ लगता है।

ठीक है, आइए प्रभु के दिन के विवरण और संदेश को देखें और उसकी प्रस्तावना, टिड्डियों की महामारी जो पहले ही देश में आ चुकी है। योएल चाहता है कि वे समझें कि परमेश्वर ने उन पर न्याय लाया है, एक चेतावनी के रूप में कि और अधिक न्याय आने वाला है। टिड्डियों की महामारी सिर्फ उसी की प्रस्तावना है। यह सिर्फ वह तीर है जिसे परमेश्वर ने धनुष पर चलाया है।

और फिर, हम योएल और अमोस की पुस्तक के बीच एक और संबंध देखते हैं जो इसके तुरंत बाद आती है। ये दोनों भविष्यवक्ता टिड्डियों के आक्रमणों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं। और अमोस की पुस्तक में, परमेश्वर कहता है, मैंने इन टिड्डियों को भेजा है, मैंने उन्हें तुम्हें चेतावनी देने के लिए भेजा है, लेकिन अध्याय चार में, फिर भी तुम मेरे पास वापस नहीं आए।

और इसलिए, अमोस के दिनों में, परमेश्वर ने टिड्डियों की महामारी भेजी और लोगों का ध्यान इस पर नहीं गया। योएल में, परमेश्वर ने टिड्डियों की महामारी भेजी और सौभाग्य से, लोगों का ध्यान इस पर गया। अमोस ने अध्याय सात, श्लोक एक से तीन में भी टिड्डियों की महामारी का उल्लेख किया है।

अमोस को इस टिड्डे की विपत्ति का दर्शन होता है जो पूरे देश में फैल जाएगी। उसे एहसास होता है कि इसका कितना विनाशकारी प्रभाव होने वाला है। वह लोगों को बचाने के लिए भगवान से प्रार्थना करता है, और भगवान नरम पड़ जाते हैं और न्याय नहीं भेजते।

परमेश्वर उन्हें पश्चाताप करने और उसके पास लौटने के लिए उनके प्रतिरोध के बावजूद एक और अवसर देता है। इसलिए, मुझे लगता है कि जोएल को पुस्तक के आरंभ में जिस तरह से रखा गया है, उसके पीछे एक और साहित्यिक विषयगत कारण है। अध्याय एक में, हमें राष्ट्रीय प्रतिक्रिया का बहुत ही स्पष्ट वर्णन मिलता है जिसे परमेश्वर अपने लोगों की ओर से इस निर्णय के परिणामस्वरूप देखना चाहता है जो उसने उनके विरुद्ध भेजा था।

पद दो से चार में यह कहा गया है, और हम पद एक से शुरू करते हैं, जोएल के पास आए प्रभु के वचन हैं। और हमारे पास जो कुछ हो रहा है उसका वर्णन है। हे पुरनियों, हे देश के सब निवासियों, इसे सुनो, कान लगाओ।

क्या आपके दिनों में या आपके पिताओं के दिनों में ऐसा कुछ हुआ है? मेरा मतलब है, यह एक बड़ी घटना थी। अपने बच्चों को इसके बारे में बताएं और अपने बच्चों को अपने बच्चों और अपने बच्चों को अगली पीढ़ी को बताने दें। वे लंबे समय तक इस बारे में बात करते रहेंगे।

और जो हुआ है, वह यह है कि काटने वाले टिड्डे ने जो कुछ छोड़ा, उसे झुंड में रहने वाले टिड्डे ने खा लिया। झुंड में रहने वाले टिड्डे ने जो कुछ छोड़ा, उसे उछलने वाले टिड्डे ने खा लिया। और उछलने वाले टिड्डे ने जो कुछ छोड़ा, उसे नष्ट करने वाले टिड्डे ने खा लिया।

और टिप्पणीकार इस बात पर चर्चा करने जा रहे हैं कि हमारे यहाँ टिड्डे के लिए चार अलग-अलग नाम हैं। क्या हम टिड्डे की चार किस्मों और प्रजातियों के बारे में बात कर रहे हैं? या हम टिड्डे के विकास और वृद्धि के चार अलग-अलग चरणों के बारे में बात कर रहे हैं? आखिरकार, यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। टिड्डे के लिए इन चार अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल इस झुंड की पूर्णता पर जोर देने का एक अलंकारिक तरीका है, कि टिड्डे की कितनी बड़ी मात्रा ने भूमि पर आक्रमण किया था, और उन्होंने फसलों और लोगों की अर्थव्यवस्था पर कितना कहर बरपाया था।

यह सीधे तौर पर परमेश्वर की ओर से एक निर्णय था। याद रखें, व्यवस्थाविवरण 28 और लैव्यव्यवस्था 26, परमेश्वर आपके विरुद्ध जो शाप भेजेगा, उनमें से एक यह है कि भूमि के आशीर्वाद का आनंद लेने के बजाय, परमेश्वर आपके विरुद्ध टिड्डे भेजेगा और वे आपकी फसलें खा जाएँगे। ठीक यही हुआ है।

और ये चार अलग-अलग शब्द दर्शाते हैं कि यह कितना विनाशकारी होगा। अब, यदि आप यह सोचने में रुचि रखते हैं कि टिड्डियों के प्रकोप का अनुभव करना कैसा होगा, तो नेशनल जियोग्राफिक वेबसाइट पर अफ्रीका और मध्य पूर्व में होने वाले टिड्डियों के प्रकोप के प्रकारों के बारे में कुछ रोचक जानकारी है। और उन्होंने पुराने नियम के दिनों में इनका अनुभव किया था।

यह कुछ ऐसा है जो अफगानिस्तान में टिड्डियों के प्रकोप और उस देश की फसलों और अर्थव्यवस्था पर इसके विनाशकारी प्रभाव के बारे में वहाँ के लोगों के अनुभव का हिस्सा है। इसकी वजह से यह सचमुच एक राष्ट्रव्यापी संकट था। नेशनल जियोग्राफिक वेबसाइट हमें यह जानकारी देती है।

इसमें कहा गया है कि मध्य पूर्व में इन टिड्डियों का एक समूह 450 वर्ग मील से भी ज़्यादा बड़ा हो सकता है। यह बहुत ज़्यादा टिड्डियाँ हैं। एक टिड्डी दल आधे वर्ग मील से भी कम जगह में 40 से 80 मिलियन टिड्डियों को इकट्ठा कर सकता है।

प्रत्येक टिड्डी, और आधे वर्ग मील में 40 से 80 मिलियन, प्रतिदिन अपने वजन के बराबर अनाज या पौधे खा सकते हैं। और इसलिए, इसका मतलब यह है कि उस आकार का झुंड हर दिन 423 मिलियन पाउंड भोजन खा सकता है। हम नहीं जानते कि जोएल जिस टिड्डी झुंड के बारे में बात कर रहे हैं उसका आकार उस आकार का है या नहीं, लेकिन हम एक महत्वपूर्ण प्रभाव के बारे में बात कर रहे हैं, न केवल उनकी आजीविका पर, बल्कि कुछ ऐसा जो उनके अस्तित्व को खतरे में डाल सकता है।

मेरा मतलब है कि इससे अकाल पड़ सकता है जो बहुत ज़्यादा मौतें और तबाही ला सकता है। ये टिड्डे के झुंड अविश्वसनीय दूरी की यात्रा करने में भी सक्षम हैं। 1954 में, वैज्ञानिकों ने दस्तावेज किया कि टिड्डों का एक झुंड उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका से ग्रेट ब्रिटेन तक उड़ गया।

और 1988 में, पश्चिमी अफ्रीका से लेकर कैरिबियन तक। तो, यह कोई मामूली घटना नहीं है। यह एक विनाशकारी टिड्डी महामारी है।

और यह परमेश्वर का न्याय है। परमेश्वर चाहता है कि लोग पाप की गंभीरता को समझें। और फिर, यदि आप बाइबल में कटाई और बोने के सिद्धांत को स्पष्ट करना चाहते हैं, तो भविष्यवक्ताओं के पास ऐसा करने के लिए एक बेहतरीन जगह है।

लोग अपने पाप बोते हैं, और वे सैन्य आक्रमण, निर्वासन और विजय के परिणामों को काटते हैं। वे दुष्टता बोते हैं, वे परमेश्वर द्वारा उनकी भूमि और उनकी फसलों को पूरी तरह से नष्ट करने के परिणामों को काटते हैं, और यही हुआ है। और जोएल अध्याय 1 में हम पाते हैं कि निर्वासन के बाद के समुदाय में विभिन्न लोगों को रोने और जो कुछ हुआ है उसके लिए शोक करने का आह्वान किया गया है।

सबसे पहले, पद 2 में नेताओं को बुलाया गया है। पद 5 में शराब पीने वालों को बुलाया गया है। और जाहिर है कि वे इस बात से परेशान होंगे क्योंकि उनकी शराब का स्रोत छीन लिया गया है। अध्याय 1, पद 8 में याजकों को शोक मनाने के लिए बुलाया गया है। याजकों को शोक मनाने वाली एक बात यह है कि इन फसलों के नष्ट होने का मतलब है कि लोग अनाज और पेय भेंट नहीं चढ़ा पाएंगे जिससे परमेश्वर का आशीर्वाद मिलता। और इसलिए यह न्याय को कायम रखने वाला है और परमेश्वर और उसके लोगों के बीच दूरी को बनाए रखने वाला है।

अध्याय 1, श्लोक 11, किसानों, जो अपनी आजीविका के लिए इन फसलों पर निर्भर हैं, को शोक मनाना चाहिए। और जिन फसलों का उल्लेख किया गया है, उन्हें सुनो। दाखलता सूख जाती है, अंजीर का पेड़ मुरझा जाता है, अनार, ताड़, सेब और मैदान के सभी पेड़ सूख जाते हैं, और मनुष्य के बच्चों से खुशी खत्म हो जाती है।

और इसलिए, कई फसलें नष्ट हो गईं, और किसानों को इसके लिए शोक मनाना चाहिए। और इसलिए, सभी लोगों को जो कुछ हुआ है उसके लिए रोना चाहिए, और अंततः केवल एक राष्ट्रीय आपदा के लिए रोना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें इसका उपयोग करना चाहिए, और उन्हें इस दुःख के समय का उपयोग भगवान के प्रति अपने पश्चाताप को व्यक्त करने के तरीके के रूप में करना चाहिए। हाँ, आपने इन फसलों और भोजन और आजीविका के नुकसान में भौतिक स्तर पर कुछ भयानक अनुभव किया है, और आपके सामने एक राष्ट्रीय संकट है, लेकिन अंततः आपको अपने पाप का पश्चाताप करने की आवश्यकता है।

पद 14 में पवित्र सभा बुलाओ और परमेश्वर के साथ सही संबंध बनाओ। और इसका कारण, और इसके पीछे चेतावनी, यह है कि, अफसोस, वह दिन, क्योंकि प्रभु का दिन निकट है, और सर्वशक्तिमान की ओर से विनाश के रूप में, यह आता है। ठीक है? वह यह नहीं कहता है, देखो, तुमने अभी प्रभु के दिन, टिड्डियों की विपत्ति के न्याय का अनुभव किया है।

प्रभु का दिन निकट है, मार्ग में एक और न्याय है, और इसलिए अध्याय 2 में या अध्याय 1 में पश्चाताप करने का आह्वान है। पश्चाताप करने का वह आह्वान और आने वाले न्याय की दूसरी चेतावनी भी हमें अध्याय 2, श्लोक 1 से 3 में दी गई है। सुनिए कि वह अध्याय कैसे शुरू होता है। सिय्योन में तुरही बजाओ, मेरे पवित्र पर्वत पर अलार्म बजाओ। तो फिर, हमारे पास या तो युद्ध का समय है या आपदा का समय है, और लोगों को यह पहचानने के लिए बुलाया जाता है कि परमेश्वर कुछ ऐसा करने की तैयारी कर रहा है जो उनके द्वारा अभी-अभी अनुभव किए गए से भी बदतर है।

और पद 2 में, या फिर पद 1 के अंत में, आने वाले न्याय का यह विचार, यह प्रभु का दिन है। क्योंकि प्रभु का दिन आ रहा है। यह निकट है। ठीक है? तो, क्या आप यहाँ सपन्याह की पुस्तक से सीधा संबंध देखते हैं? यह अंधकार और उदासी का दिन होगा, बादलों और घने अंधकार का दिन, और ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।

ठीक है, परमेश्वर के क्रोध का सफेद पानी फिर से लोगों पर डाला जाएगा। अब, पद 3 में, हमारे पास एक विवरण है कि वह न्याय कैसा होगा, और यह योएल की पुस्तक में प्रमुख व्याख्यात्मक प्रश्नों और मुद्दों में से एक को उठाता है। यहाँ बताया गया है कि यह क्या कहता है।

ऐसा लगता है कि वह यहाँ क्या वर्णन कर रहा है? ऐसा लगता है जैसे भविष्यवक्ता हमारे लिए एक और टिड्डी विपत्ति का वर्णन कर रहा है। और इसलिए, यहाँ व्याख्यात्मक मुद्दा यह है कि क्या हम इसे शाब्दिक रूप से या रूपक के रूप में पढ़ते हैं? संभवतः अध्याय 1 और 2 केवल भिन्न संदेश हो सकते हैं जो इसी टिड्डी आक्रमण के संबंध में प्रचारित किए गए थे? यह एक संभावना है। एक और संभावना यह है कि अध्याय 2 आगे बढ़ रहा है और आगे बढ़ रहा है, और मुझे लगता है कि यह अधिक संभावना है, और यह आने वाले एक और निर्णय की चेतावनी दे रहा है, और इस टिड्डी संक्रमण की दूसरी लहर आने वाली है जो आक्रमण और झुंड से भी बदतर होने वाली है जिसका उन्होंने पहले ही अनुभव किया है।

तो, टिड्डे वापस स्टेज 2 पर आ रहे हैं। यह एक और स्थिति है और इस अंश को दी गई एक और व्याख्या है। लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ तीसरी संभावना यह है कि वह जो कर रहा है, और यह कलात्मकता और बयानबाजी में वास्तव में प्रभावी है और जिस तरह से वह ऐसा करता है, वह यह है कि वह टिड्डों के आक्रमण का उपयोग दुश्मन सेना के आक्रमण को चित्रित करने के लिए कर रहा है जो भूमि पर आने वाली है। और यह आने वाले निर्णय की गंभीरता को बढ़ाने वाला है।

और इसी तरह से जिस तरह से यह टिड्डी विपत्ति भूमि में आई है और फसलों को नष्ट कर दिया है और भूमि को तबाह कर दिया है, कुछ बदतर क्षितिज पर है। सैनिकों का एक समूह, टिड्डियों की विपत्तियों की तरह असंख्य, टिड्डियों की तरह असंख्य, भूमि में घुस आए हैं, एक सेना जो भूमि को पूरी तरह से तबाह करने जा रही है जैसा कि इन टिड्डियों ने किया था। मुझे लगता है कि अध्याय 2 में यही बात ध्यान में रखी गई है। अब आप सवाल उठा सकते हैं, ठीक है, अगर ऐसा है, अगर किसी सेना का यहाँ केवल वर्णन किया जा रहा है, या अगर किसी सेना का यहाँ रूपक रूप से वर्णन किया जा रहा है, तो ऐसा क्यों कहा गया है कि वे युद्ध के घोड़ों की तरह हैं जिन्हें वे दौड़ाते

हैं, कि वे एक शक्तिशाली सेना की तरह हैं, या कि वे योद्धाओं की तरह हैं या दीवार पर चढ़ते सैनिकों की तरह हैं? खैर, हिब्रू में जैसे या जैसे पूर्वसर्ग के उपयोगों में से एक, कभी-कभी इसका उपयोग तुलना या उपमा बनाने के लिए किया जा सकता है, लेकिन अन्य समय में, इसका उपयोग इस बात पर जोर देने के लिए किया जा सकता है कि तुलना बिल्कुल ऐसी है क्योंकि यह उस चीज़ की पहचान है जिसका वर्णन किया जा रहा है। मुझे लगता है कि हमारे पास यह जोएल अध्याय 2, श्लोक 1-15 में है, प्रभु के दिन के लिए अफसोस, क्योंकि प्रभु का दिन निकट है, और सर्वशक्तिमान से विनाश या विनाश की तरह आता है।

वह श्लोक केवल यह नहीं कह रहा है कि टिड्डियों का प्रकोप उस आक्रमण की तरह था जिसे परमेश्वर लाने वाला था। यह कह रहा था कि यह विनाश था जिसे परमेश्वर लाने वाला था। और इसलिए, तुलना केवल समानता की नहीं है; यह पहचान की है। और यहाँ, मुझे लगता है कि पूर्वसर्ग का उपयोग उसी तरह किया जा रहा है जब यह कहता है कि यह युद्ध के घोड़ों की तरह है, यह एक शक्तिशाली सेना की तरह है, यह योद्धाओं की तरह है, यह सैनिकों की तरह है; पूर्वसर्ग का वास्तव में एक गहन तरीके से उपयोग किया जा रहा है यह कहने के लिए कि देखो, यह वास्तव में ऐसा ही है।

और इसलिए, जब यह सेना इस्राएल की भूमि पर आती है, तो निकट भविष्य में यहूदा को इसी का सामना करना पड़ता है। भविष्यवक्ता उन्हें चेतावनी दे रहा है कि अगर परमेश्वर के प्रति उचित प्रतिक्रिया नहीं हुई तो क्या होगा। और फिर हमारे पास पश्चाताप के लिए एक और आह्वान है और जो मैं जोएल की पुस्तक में मुख्य अंश के रूप में देखता हूँ।

योएल अध्याय 2 पद 12-17: फिर भी, यहोवा की यह वाणी है, अपने पूरे मन से मेरे पास लौट आओ, उपवास, रोना, विलाप करते हुए, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आओ। और हम परमेश्वर के उन गुणों पर वापस जाते हैं जो निर्गमन 34:6 में पाए जाते हैं। वह दयालु है, वह दृढ़ प्रेम में भरपूर है, और वह विपत्ति पर नरम पड़ता है।

अगर वे ईश्वर के पास लौटते हैं, तो संभावना है कि पैगंबर ने उन्हें जो न्याय के बारे में चेतावनी दी है, उसे टाला जा सकता है। याद रखें, पैगंबर केवल यह नहीं कह रहे हैं कि भविष्य यही है। यह पत्थर पर लिखा है। वे हमें इस बात की छाया दे रहे हैं कि अगर लोग ईश्वर के पास वापस नहीं आते हैं तो भविष्य में क्या होगा।

लेकिन हमेशा संभावना बनी रहती है, जैसा कि हमने नीनवे के मामले में देखा है, जैसा कि हमने यिर्मयाह अध्याय 18 आयत 7-10 में देखा है, जैसा कि हमने मीका के उपदेश में देखा, यिर्मयाह 26-19, हमेशा संभावना बनी रहती है कि अगर लोग इस न्याय को गंभीरता से लें, तो शायद परमेश्वर नरम न पड़ें, शायद परमेश्वर नरम पड़ें और शायद वह न्याय न भेजें जिसकी धमकी उन्होंने दी है। कौन जानता है कि परमेश्वर नहीं मुड़ेंगे? अगर वे परमेश्वर की ओर मुड़ेंगे, तो परमेश्वर मुड़ेंगे, और परमेश्वर नरम पड़ेंगे और अपने पीछे आशीर्वाद छोड़ेंगे, एक अन्नबलि और एक अर्घ्य आपके परमेश्वर यहोवा के लिए।

इसलिए, यदि वे इस पवित्र सभा को बुलाएँगे, यदि वे वास्तव में पश्चाताप करेंगे, यदि वे अपने दिलों को चीर देंगे और किसी तरह के समारोह से नहीं गुजरेंगे, यदि वे वास्तव में परमेश्वर के पास वापस आएँगे, यह दुश्मन सेना जो देश में जाएगी और देश को तबाह कर देगी, और फिर से, हम नहीं जानते कि यह सेना कौन है या वह किस खतरे की बात कर रही है, यदि वे परमेश्वर की बात सुनेंगे, तो उस न्याय को टाला जा सकता है। यहूदा के इतिहास और इस्राएल के इतिहास में दुखद बात यह है कि उनके पास परमेश्वर के वचन को न सुनने का यह लंबा इतिहास है, और जब परमेश्वर के नरम पड़ने और न्याय न भेजने की संभावना, जब लोगों को यह पेशकश की जाती है, तो अधिकांश समय वे इसका लाभ नहीं उठाते हैं। यिर्मयाह जाता है और अपने मंदिर में उपदेश देता है और फिर बाद में मंदिर में न्याय की अपनी भविष्यवाणियों की पुस्तक को इस उम्मीद के साथ पढ़ने जा रहा है कि शायद, शायद, वे सुनेंगे और पश्चाताप करेंगे।

जब वे नहीं सुनते और पश्चाताप नहीं करते, तो बेबीलोन के आक्रमण के रूप में न्याय आता है। यहाँ हमारे पास जो आश्चर्यजनक तत्व है वह यह है कि यह उन कुछ चुनिंदा समयों में से एक प्रतीत होता है जहाँ यहूदा के लोगों ने भविष्यवाणी की चेतावनी को गंभीरता से लिया और न्याय टल गया। इसलिए, अध्याय 2, श्लोक 16 और 17 में, उपवास का संकल्प लें, मण्डली का संकल्प लें, बड़ों को इकट्ठा करें, बच्चों को इकट्ठा करें, यहाँ तक कि दूध पीते शिशुओं को भी।

मेरा मतलब है, यह एक राष्ट्रीय संकट है। सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक सभी को साथ लाओ, और अगर वे आएँगे और अगर वे अपने दिल की बात भगवान के सामने रखेंगे, तो भगवान नरम पड़ सकते हैं और न्याय नहीं भेज सकते। अब, हमारे पास कोई विवरण या बयान या नोटेशन या कथा नहीं है कि लोगों ने वास्तव में ऐसा किया।

पद 17 और पद 18 के बीच ऐसा कुछ नहीं है जो कहता हो कि यह किया गया था। लेकिन पद 18 में परमेश्वर की प्रतिक्रिया से, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि लोगों ने वही किया जो पैगंबर ने उन्हें करने के लिए कहा था। और इस पश्चाताप के परिणामस्वरूप और इस टिड्डे की विपत्ति का अनुभव करने के बाद और मार्ग में और अधिक न्याय होने के बाद भी परमेश्वर को पुकारने के परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने दया दिखाई और वह न्याय नहीं भेजा जिसकी धमकी दी गई थी।

सुनिए श्लोक 18 क्या कहता है। तब यहोवा को अपने देश से जलन हुई, और उसने अपने लोगों पर दया की। यहोवा ने उत्तर दिया और अपने लोगों से कहा, देखो, मैं तुम्हारे लिए अनाज, दाखमधु और तेल भेज रहा हूँ, और तुम संतुष्ट हो जाओगे, और मैं तुम्हें राष्ट्रों के बीच बदनाम नहीं होने दूँगा।

मैं उत्तरी लोगों को तुमसे दूर कर दूँगा। और उत्तर का संदर्भ, मुझे लगता है, इस विचार का समर्थन करता है कि हम अध्याय दो में जिस बारे में बात कर रहे हैं वह एक सेना है, न कि केवल टिड्डियों का आक्रमण। मैं उसे एक खंडित और उजाड़ भूमि में खदेड़ दूँगा।

इसलिए, हमारे पास कोई विशेष कथन नहीं है कि उन्होंने पवित्र त्योहार मनाया या वे इकट्ठे हुए और परमेश्वर को पुकारा। लेकिन परमेश्वर का परिवर्तन और यहाँ परमेश्वर की प्रतिक्रिया लोगों

की ओर से पश्चाताप को दर्शाती है। और जैसा कि आप योएल की पुस्तक पढ़ रहे हैं, आपको यह देखना चाहिए कि अध्याय 2, श्लोक 18 वास्तव में इस पुस्तक में एक महत्वपूर्ण श्लोक है।

क्योंकि अब तक, यह सब न्याय, रोने, विलाप करने, उपवास का आह्वान करने, जो होने वाला है उसके लिए तैयार होने के बारे में रहा है। इसके बाद जो होता है वह पुनर्स्थापना के वादे हैं और यह तथ्य कि वे न्याय को टाल देंगे और परमेश्वर उन्हें न्याय के स्थान पर आशीर्वाद देने जा रहा है। इस बारे में मेरी पसंदीदा अभिव्यक्ति और परमेश्वर लोगों के लिए क्या करने जा रहा है, श्लोक 15 में पाई जाती है।

मैं उन वर्षों को तुम्हें लौटा दूंगा जो टिड्डियों ने खा लिए हैं, टिड्डियों ने, टिड्डियों ने, टिड्डियों ने, जो मैंने तुम्हारे बीच भेजी थी, खा लिए हैं। केवल परमेश्वर के पास ही वह शक्ति और क्षमता है कि वह उन्हें वह सब लौटा दे जो उन्होंने इस विनाशकारी न्याय में खो दिया है। परमेश्वर कहते हैं, मेरी कृपा से, मैं तुम्हें वे वर्ष लौटाने जा रहा हूँ जो टिड्डियों ने खा लिए हैं और खा गए हैं।

और आप न्याय और शाप के बजाय आशीर्वाद का आनंद लेने जा रहे हैं। ठीक है, तो मुझे लगता है कि इस अंश को पढ़ने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हमें लोगों के वास्तविक पश्चाताप के लिए भगवान की प्रतिक्रिया मिलती है। लेस्ली एलन यह कहते हैं, आप जानते हैं, पश्चाताप के स्पष्ट रिकॉर्ड के बिना भी, हम यह मानने के लिए अभिप्रेत हैं कि जोएल की अपील अंततः सफल रही।

अंत में, लोगों ने भविष्यवक्ता की बात सुनी। जाहिर है, लोग उपवास और विलाप की राष्ट्रीय सेवा के लिए एकत्र हुए और पुजारी ने वास्तव में पश्चाताप करने वाले समुदाय की ओर से विधिवत प्रार्थना की। और उसके कारण, परमेश्वर ने जवाब दिया और न्याय नहीं भेजा, उसी तरह जैसे परमेश्वर ने पश्चाताप किया और योना के उपदेश के माध्यम से नीनवे के लोगों को नष्ट नहीं किया।

ऐसा योएल अध्याय 2 में होता है। ठीक उसी तरह जैसे जब मीका ने कहा कि यरूशलेम को समतल किया जाएगा और मंदिर पर्वत को मलबे के ढेर में बदल दिया जाएगा, जब हिजकियाह ने पश्चाताप किया, यिर्मयाह 26:17 से 19, परमेश्वर ने दया दिखाई और न्याय नहीं भेजा। हालाँकि, यहाँ हमारे सामने एक समस्या यह है कि संभावना है कि पद 18 लोगों द्वारा किए गए कार्यों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया का वर्णन करता है, वास्तव में इस पद के लिए दी गई व्याख्याओं में से केवल एक है। और यहाँ मुद्दा पद 18 में मौजूद विशिष्ट क्रिया रूपों से संबंधित है।

हमारे पास हिब्रू अपूर्ण क्रिया का एक रूप है, जिसके सामने एक संयोजक, एक वव है। और इसलिए, हमें इन रूपों को कैसे पढ़ना चाहिए जिन्हें वैयक्तोल क्रियाएँ कहा जाता है? इसकी दो अलग-अलग व्याख्याएँ हैं। कई टिप्पणीकार इनका अनुवाद ईश्वर द्वारा की गई पिछली घटनाओं के वर्णन के रूप में नहीं, बल्कि भविष्यसूचक पूर्णता के रूप में करने जा रहे हैं।

और यही एक तरीका है जिससे इस विशेष निर्माण को पढ़ा जा सकता है। इन्हें भविष्यसूचक पूर्णता के रूप में पढ़ा जाएगा, जहाँ यह इस बात का वर्णन नहीं है कि परमेश्वर ने लोगों के पश्चाताप के जवाब में उनके लिए क्या किया, बल्कि यह केवल एक वादा है कि परमेश्वर अंततः

भविष्य की पुनर्स्थापना के समय लोगों के लिए क्या करेगा। और इसलिए कुछ व्याख्याकार वास्तव में इस मार्ग की व्याख्या इस तरह से करने जा रहे हैं।

यह कोई कहानी नहीं है, यह इस बात का विवरण नहीं है कि परमेश्वर ने लोगों के लिए क्या किया। यह अंततः वही है जो परमेश्वर करने जा रहा है। और यह हमारे कुछ अंग्रेजी अनुवादों में भी परिलक्षित होता है।

किंग जेम्स, न्यू इंटरनेशनल वर्जन, न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड, वे इन्हें अनिवार्य रूप से भविष्यसूचक पूर्णता के रूप में पढ़ने जा रहे हैं। और इसलिए, इस क्रिया रूप का उपयोग यहाँ इस विचार पर जोर देने के लिए किया जा सकता है कि हम भविष्य की घटना के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन इसे क्रिया रूप से व्यक्त किया जाता है जो आम तौर पर अंतिम पूर्ति की निश्चितता पर जोर देने के लिए अतीत की चीजों के बारे में बात करता है। यह उतना ही अच्छा है जैसे कि भगवान ने पहले ही यह कर दिया है क्योंकि भगवान अपना वादा निभाते हैं।

ऐसे कई टिप्पणीकार हैं जो इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं और जो वैयिक्टोल क्रियाओं को इस तरह समझते हैं। नागोव्स्की, स्टीवर्ट और स्वीनी, अपनी टिप्पणियों में, इन्हें ईश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्यों के बारे में वादों के रूप में देखेंगे। हालाँकि, अन्य टिप्पणीकार, और यहीं पर मैं इस पर आ रहा हूँ, इस तथ्य पर ध्यान दें कि वैयिक्टोल का सामान्य उपयोग उस चीज़ का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिसे हम प्रीटरिट कहते हैं।

इसका उपयोग भूतकाल की घटनाओं के बारे में बात करने या किसी कथा या कहानी में घटित घटनाओं को रिकॉर्ड करने के लिए किया जाता है। अब, आप कह सकते हैं, ठीक है, हमारे पास वास्तव में कोई कथा या कहानी नहीं है। लेकिन ट्रॉक्सेल नामक एक लेखक ने इस अंश में एक लेख में जो उल्लेख किया है, जो मुझे बहुत अच्छा लगता है, वह यह है कि हमारे पास योना की पिछली सेवकाई के बारे में एक कथा है।

और इसे अध्याय 1, पद 1 में कथात्मक रूप में रखा गया है, जोएल के पास आए प्रभु के वचन हैं। और इसलिए, हमारे पास जोएल का अतीत का ऐतिहासिक संदेश है, फिर हमारे पास जोएल द्वारा दिए गए भविष्यवाणियाँ हैं, और ट्रॉक्सेल का तर्क है कि हमारे पास अध्याय 2, पद 18 में कथा की पुनः शुरुआत है। भविष्यवाणियों के रूप में संदेश वर्तमान में रखा गया है, लेकिन हम जोएल द्वारा वास्तव में उपदेश दिए जाने के बारे में बात कर रहे हैं।

और यहोवा को उस देश के विषय में जलन हुई। उसे लोगों पर दया आई। उसने लोगों को उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे लिये यह करूँगा।"

और इसलिए, ईएसवी और नेट बाइबिल में और इस समझ में, हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि प्रभु ईर्ष्या करने का वादा करता है, प्रभु दया करने का वादा करता है, लेकिन इस तथ्य के बारे में कि प्रभु ने वास्तव में ऐसा किया। और फिर, तथ्य यह है कि वैयिक्टोल क्रियाएँ, संयोजन के साथ अपूर्ण क्रिया का यह विशेष रूप, आमतौर पर भूतकाल या कथात्मक अतीत को व्यक्त करने के लिए उपयोग किया जाता है जो इस के सबसे संभावित पढ़ने की तरह लगता है। इसके अतिरिक्त, श्लोक 20 में, श्लोक 28 में, यह कहता है, और यह बाद में घटित होगा।

और इसलिए यह उस आशीर्वाद की ओर देख रहा है जो भविष्य में होने वाला है, उस तत्काल आशीर्वाद से परे जो परमेश्वर ने अपने लोगों के पश्चात्ताप के जवाब में पहले ही खरीदा है। इसलिए, टिप्पणीकारों और व्याख्याकारों और यहां तक कि हमारे अंग्रेजी अनुवादों द्वारा व्याख्या करने के कुछ अलग-अलग तरीके हैं; योएल अध्याय 2, श्लोक 18 से 27 को पढ़ें। लेकिन मुझे लगता है कि इसे पढ़ने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हमारे पास यहां एक विवरण है कि लोग परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया कैसे करते हैं और यहां बताया गया है कि परमेश्वर अंततः उनके पश्चात्ताप और उनके प्रति उनकी प्रतिक्रिया के प्रकाश में उन्हें आशीर्वाद देने का वादा कैसे करता है।

तो, यहाँ वादा है, परमेश्वर उन्हें बहाल करने जा रहा है, परमेश्वर उन्हें वह सब वापस देने जा रहा है जो उन्होंने टिड्डियों की महामारी में खो दिया है। वाचा के अभिशाप वाचा के आशीर्वाद में बदल जाएँगे। ठीक है, तत्काल बहाली से परे, और हम पहले ही यह देख चुके हैं, मुझे लगता है, हागै और जकर्याह की भविष्यवाणियों में, निर्वासन के बाद के समुदाय के लिए परमेश्वर द्वारा की जाने वाली तत्काल चीजों से परे आशीर्वाद है।

अगर हम योएल को निर्वासन से पहले लिखी गई किताब के रूप में भी लें, तो भी इसमें परम आशीर्वाद हैं। यह अंतिम आशीर्वाद है, अंतिम पुनर्स्थापना है जो परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के लिए निकट भविष्य में किए जाने वाले किसी भी कार्य से कहीं बढ़कर है। और यही योएल अध्याय 2, आयत 28 से 32 में भविष्यवक्ता का ध्यान केंद्रित करता है।

और मैं उस पर गौर करना चाहता हूँ। मैं उस अंश को बस संक्षेप में देखना चाहता हूँ। योएल अध्याय 2, श्लोक 28 से 32, कहते हैं, यह इन तात्कालिक आशीर्षों के बाद और जब मैं इसे उलट दूँगा, तो दूर के भविष्य में किसी अनिर्दिष्ट समय पर, मैं अपनी आत्मा को सभी प्राणियों पर उंडेलूँगा।

तुम्हारे बेटे और बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे बुजुर्ग सपने देखेंगे। और यह आत्मा का उंडेला जाना है जो अंतिम पुनर्स्थापना में, अंतिम दिनों में होने वाला है। और इसलिए यह योएल के समय से आगे बढ़ रहा है और परमेश्वर के अंतिम राज्य की ओर देख रहा है।

याद रखें, भविष्यवक्ताओं की व्याख्या करने में चुनौतियों में से एक यह है कि उनके क्षितिज बदल जाते हैं। जब वे दो पहाड़ों को देखते हैं, तो वे उन चीजों के बारे में बात करते हैं जो एक दूसरे से बहुत दूर हैं और कभी-कभी उन्हें एक साथ जोड़ती हैं। यहाँ जोएल जो पहाड़ देखता है, वह यह है कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर दया की और उनसे वादे किए जिन्हें वह निकट भविष्य में पूरा करने जा रहा है।

लेकिन आखिरकार आखिरी दिनों में आत्मा का उंडेला जाना तय है। जब हम मीका की किताब का अध्ययन कर रहे थे, तो हमने इन आखिरी दिनों के वादों पर गौर किया। हमने योएल की किताब और यहाँ दिए गए वादे पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कुछ समय लिया।

और हमने देखा कि जैसे-जैसे हम नए नियम के समय में आगे बढ़ते हैं, हम समझते हैं कि जोएल 2:28-32 में जोएल द्वारा की गई प्रतिज्ञा की पूर्ति अभी और अभी नहीं हुई है। अब, चर्च ने पहले से

ही उस आत्मा के उंडेले जाने का अनुभव करना शुरू कर दिया है जिसका वादा परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के लिए किया था। पतरस पिनतेकुस्त के दिन कहता है, जो तुम यहाँ देख रहे हो और जो घटनाएँ तुम यहाँ देख रहे हो, जो तुम यहाँ देख रहे हो वह जोएल 2, 28-32 की पूर्ति है।

और यह पूर्ति चर्च के अंतिम दिनों की पूरी अवधि के दौरान जारी रहेगी और आगे बढ़ेगी। लेकिन यह मसीह के दूसरे आगमन पर और उस समय पूर्ण होगी जब इस्राएल इसका अनुभव करेगा, और वाचा की पूरी आशीषों का अनुभव किया जाएगा और उंडेला जाएगा। अब, इस भविष्यवाणी के श्लोक 30 में, यह कहा गया है कि मैं आकाश और पृथ्वी पर चमत्कार दिखाऊंगा, खून और आग और धुएँ के खंभे।

प्रभु के महान और भयानक दिन के आने से पहले सूर्य अंधकार में बदल जाएगा और चंद्रमा रक्त में बदल जाएगा। इसलिए, भविष्यवाणी का यह हिस्सा परम, पूर्ण और अंतिम, प्रभु के भयानक दिन की ओर देख रहा है जो सभी चीजों की परिणति से पहले आता है। लेकिन भविष्यवाणी के इस हिस्से में भी, मेरा मानना है कि हमारे पास अभी और अभी तक तत्व नहीं हैं।

जब पैगंबर ने धुएँ और आग की छवि का उपयोग किया, सूरज का काला पड़ना और चंद्रमा का खून में बदल जाना, तो मुझे लगता है कि हमारे पास यहां युद्ध का एक रूपक वर्णन हो सकता है। खून में बदल रहा चंद्रमा शायद चंद्र ग्रहण के साथ होने वाली घटना को दर्शाता है, जो खून जैसा दिखता है। आकाश में होने वाली इस तरह की घटना प्राचीन निकट पूर्व में किसी प्राकृतिक या राष्ट्रीय आपदा का शगुन थी जो होने वाली थी।

यह अक्सर युद्ध या दुश्मन सेना के आक्रमण की प्रस्तावना होती थी। और इसलिए जोएल यहाँ जिस बारे में बात कर रहा है वह यह है कि आत्मा के उंडेले जाने के साथ-साथ, आपदा और विपत्ति और युद्ध और ये सभी चीजें होने वाली हैं। लेकिन फिर से, मुझे लगता है कि जब हम नए नियम में इसकी पूर्ति को देखते हैं, तो हमारे पास संभवतः अभी और अभी तक पूर्ति दोनों हैं।

जोएल, यहाँ, निकट पूर्ति के संदर्भ में और पिनतेकुस्त के दिन के बारे में बात करते हुए, शायद 70 ई. में होने वाले यरूशलेम के विनाश के बारे में बात कर रहे हैं। लेकिन अंततः, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मसीह के आगमन और दूसरे आगमन के समय से पहले प्रभु के अंतिम दिन पर अंतिम विनाशकारी न्याय के बारे में बात करने के लिए इसी कल्पना का उपयोग करने जा रही है। और इसलिए, मुझे लगता है कि आत्मा के उंडेले जाने और आग और धुएँ और सूर्य के अंधकार में बदल जाने और चंद्रमा के रक्त में बदल जाने के साथ, इसकी निकट और दूर की पूर्तियाँ भी हैं।

योएल अध्याय 3 में, भविष्यवक्ता का क्षितिज पूरी तरह से इस भविष्य के समय में चला जाता है। और प्रभु फिर से एक अंतिम और सार्वभौमिक न्याय के बारे में बात करने जा रहा है जो सभी राष्ट्रों पर लागू होने जा रहा है। और अध्याय 3 और श्लोक 2 में, यह कहा गया है, प्रभु यहाँ एक अंतिम न्याय के बारे में बात करता है, यहोशापात की घाटी में होने वाले राष्ट्रों पर एक न्याय।

यह किसी विशिष्ट स्थान की पहचान नहीं है। यहोशापात, नाम का अर्थ है कि प्रभु ने न्याय किया है। और यह वह स्थान होगा जहाँ प्रभु राष्ट्रों पर अपना अंतिम निर्णय निष्पादित करेगा।

और राष्ट्रों का न्याय इस्राएल के उद्धार और अंतिम पुनर्स्थापना को लाएगा जो निर्वासन से वापसी में केवल आंशिक रूप से साकार हुआ था। हमारे पास अध्याय 3, श्लोक 10 में एक दिलचस्प श्लोक है। जैसे ही ये राष्ट्र नीचे आते हैं, वे इस्राएल पर युद्ध छेड़ने जा रहे हैं।

यह एक अंतिम युद्ध है। और परमेश्वर इन राष्ट्रों को लाने जा रहा है, न केवल इस्राएल को न्याय के एक और अंतिम कार्य में शुद्ध करने के लिए, बल्कि अंततः राष्ट्रों का न्याय करने के लिए भी। अध्याय 3, श्लोक 10 में क्या कहा गया है, इसे सुनें।

इसमें कहा गया है, अपने हल के फाल को तलवार और अपने काँटों को भालों में बदलो, और कमज़ोर को कहने दो, मैं योद्धा हूँ। मीका के अध्याय 4 में हमें जो युगांतकारी दर्शन दिया गया है, उसका हमारे पास सीधा उलटा है। वहाँ, राष्ट्र अपनी तलवारों को हल के फाल में बदलने जा रहे हैं और अब युद्ध नहीं सीखेंगे। आखिरकार यही भविष्य के राज्य में होने वाला है।

लेकिन उससे पहले, राष्ट्र इसके विपरीत करने जा रहे हैं। वे अपने हल को तलवारों में बदलने जा रहे हैं, और वे अपने कृषि उपकरणों को हथियार में बदलने जा रहे हैं। और यह सब अंतिम निर्णय की ओर ले जाएगा जो अंततः विश्व शांति लाएगा जिसका वादा परमेश्वर ने मीका अध्याय 4 में किया है। इस्राएल का उद्धार प्रभु के इस अंतिम दिन, अध्याय 3, श्लोक 14 और 15 के परिणामस्वरूप होगा।

निर्णय की घाटी में भीड़, भीड़, क्योंकि निर्णय की घाटी में प्रभु का दिन निकट है। अब, प्रभु का दिन निकट है। यहूदा पर केवल न्याय नहीं है, न ही केवल कुछ ऐसा है जो निकट भविष्य में होने वाला है।

लेकिन प्रभु के अंतिम दिन में सभी लोगों पर प्रभु का न्याय निकट है। सूर्य और चंद्रमा अंधकारमय हो गए हैं, और तारे लुप्त हो गए हैं। वे चमक रहे हैं।

और प्रभु सिय्योन से दहाड़ने जा रहा है। इन सबके बीच, और इस सारी आपदा और विपत्ति के बीच, परमेश्वर न्याय करके इस्राएल को शुद्ध करेगा और अंततः उन बचे हुए लोगों को बचाएगा जो उसकी वाचा के वादों को पूरा करते हैं। और इस अराजकता और आपदा के बीच, जोएल कहता है, जो लोग प्रभु का नाम पुकारते हैं वे बच जाएँगे।

और इसलिए आशा है, प्रस्ताव है, इस सारी आपदा और अराजकता के बीच उद्धार का वादा है। जोएल अध्याय 3 में हमें जो अंतिम युद्ध का चित्रण दिया गया है, वह पुराने नियम के भविष्यसूचक दर्शन का एक हिस्सा है। हम जोएल अध्याय 3 में इस अंश को ले सकते हैं क्योंकि परमेश्वर राष्ट्रों को इकट्ठा करता है।

हम इसकी तुलना मीका के अध्याय 5, श्लोक 5 से 9 से कर सकते हैं। हम इसकी तुलना यहजकेल अध्याय 38 और 39 में गोग और मागोग के दर्शन के अंश से कर सकते हैं। हम इसकी तुलना सपन्याह अध्याय 3, श्लोक 8 और 9 में सभी लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर द्वारा किए गए राष्ट्रों के शुद्धिकरण से कर सकते हैं। हम जकर्याह अध्याय 12, श्लोक 1 से 9, और फिर

जकर्याह अध्याय 14 और उस पूरे अध्याय में इस युगांतकारी युद्ध का अधिक विस्तृत वर्णन देखते हैं। जकर्याह 14 यहूदा पर आने वाले न्याय के बारे में बात करता है, और शहर पर आक्रमण होने वाला है।

लोगों को निर्वासित किया जाएगा। महिलाओं का बलात्कार किया जाएगा। यह ऐसा समय होगा जब दो तिहाई लोगों को इसराइल की भूमि से निकाल दिया जाएगा, लेकिन अंततः ईश्वर हस्तक्षेप करेगा।

वह जैतून के पहाड़ पर उतरेगा और अपने लोगों को बचाएगा। और फिर राष्ट्रों में बचे हुए लोग भी प्रभु की आराधना करने आएंगे। तो, एक युगांतकारी युद्ध का यह विचार पुराने नियम के भविष्यसूचक दर्शन का हिस्सा है।

यह नए नियम के भविष्यसूचक दर्शन को सूचित करता है जब यह उस युद्ध के बारे में बात करता है जो प्रकाशितवाक्य 16 और 19 में आर्मागिडन में मगिदो की घाटी में होगा। प्रकाशितवाक्य पुराने नियम में पाए जाने वाले इस युगांतकारी युद्ध की हमारी समझ को आगे बढ़ाता है और बढ़ाता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 के अंत में एक अंतिम युद्ध भी है, जहाँ शैतान पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा।

इसलिए, इस्राएल और राष्ट्रों के बीच युगांतिक युद्ध का दर्शन पुराने नियम में पाया जाता है और नए नियम में हमारे लिए भरा गया है। इस युद्ध का उद्देश्य राष्ट्रों का न्याय करना, इस्राएल को उनके पापों से मुक्त करना, राष्ट्रों को शुद्ध करना है ताकि वे भी परमेश्वर के राज्य में शामिल हो सकें, बुराई और शैतान सहित दुष्ट शक्तियों की अंतिम हार प्रदान करना और अंततः शांति के राज्य का मार्ग प्रशस्त करना है जहाँ अंततः तलवारें हल के फाल में बदल जाएँगी, और इस सब की अंतिम आशा युद्ध की अनुपस्थिति में शांति है। इसलिए, मुझे लगता है कि जब हम भविष्यवाणियों को देखते हैं और जो होने वाला है, तो एक युगांतिक युद्ध का विचार जहाँ परमेश्वर राष्ट्रों का न्याय करेगा, वह तस्वीर का हिस्सा है।

और जिस दुनिया में हम रहते हैं और यहाँ तक कि आज मध्य पूर्व में जो कुछ भी हो रहा है, उसमें ऐसा होने की कल्पना करना कठिन नहीं है। लेकिन एक बात जिससे हमें सावधान रहना है, वह यह है कि अक्सर जब हम इन भविष्यसूचक अंशों को देखते हैं, तो इन अंशों के लोकप्रिय उपचारों की प्रवृत्ति उन्हें समकालीन घटनाओं से बहुत करीब से जोड़ने की होती है। इयान डुगिड ने यहजेकेल पर अपनी टिप्पणी में उल्लेख किया है कि कैसे चर्च के इतिहास में गोग और मागोग के दुश्मनों की पहचान उन लोगों के समूह से की गई है जो उस समय चर्च के मुख्य दुश्मन थे।

चौथी शताब्दी ई. में एम्ब्रोस ने उन्हें गोथ्स के साथ पहचाना। सातवीं शताब्दी में, वे अरब थे जो पवित्र भूमि पर आक्रमण कर रहे थे। 13वीं शताब्दी में, वे मंगोल गिरोह थे।

17वीं सदी में, वे पोप, तुर्क या रोमन सम्राट थे। 19वीं सदी में, शीत युद्ध में भी यही धारणा थी कि यह रूसी थे। और जब मैं रूस में पैगंबरों को पढ़ाता था, तो मेरे कुछ छात्र मुझसे पूछते थे, आप अमेरिकी हमेशा यह क्यों कहते हैं कि हम गोग और मागोग हैं? हाल ही में, इसे इस्लामी राष्ट्रों के साथ पहचाना जाने लगा है जो इसके खिलाफ़ एकजुट हो गए हैं।

इन भविष्यवाणियों का उद्देश्य हमें दुश्मन की पहचान करने में मदद करना नहीं है। हम वास्तव में ईश्वर के खिलाफ़ दुनिया भर में विद्रोह देख रहे हैं। क्या इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका भी शामिल होगा? हम नहीं जानते।

क्या उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका भी मौजूद होगा? भविष्यवाणी इस सवाल का जवाब नहीं देती। यह हमारी जिज्ञासा को संतुष्ट नहीं करती कि हम इस न्याय के कार्यान्वयन के बारे में क्या जानना चाहते हैं। लेकिन यह हमें याद दिलाता है कि एक अंतिम न्याय होगा, और हम भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर अंततः शांति का अपना राज्य लाएगा।

इयान डुगिड और मैं इस पूरे विचार के बारे में एक उद्धरण के साथ समापन करेंगे कि यह युगांतकारी युद्ध है। और वह यहजेकेल 38 से 39 के बारे में कहते हैं। मुझे लगता है कि यह उन सभी अंशों पर लागू होता है जिनका उल्लेख हमने योएल अध्याय 3, प्रकाशितवाक्य अध्याय 16 से किया है।

ये अंश इस बारे में हैं। ये संदेश उन लोगों के लिए कोडित संदेश नहीं हैं जो अंतिम दिनों में रहते हैं, जो सावधानीपूर्वक इसके रहस्यों को खोलकर, अंतिम संघर्ष में भाग लेने वालों की प्रतीकात्मक पहचान निर्धारित करने में सक्षम होंगे। बल्कि, यह सभी लोगों और सभी समय और स्थानों के सभी संतों के लिए प्रोत्साहन का एक शब्द है कि चाहे बुरी ताकतें कुछ भी करें, परमेश्वर का उद्देश्य और परमेश्वर की जीत अंततः सुरक्षित है।

और हम इस बात पर भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर ने योएल के दिनों में इस्राएल के लोगों के विरुद्ध न्यायदंड लाया। फिर उनके पश्चाताप के कारण, उसने आगे न्यायदंड भेजने से मना कर दिया और उसने वादा किया कि अंततः वह एक दिन अपनी आत्मा उंडेलेगा।

अंततः, वह एक दिन राष्ट्रों का न्याय करेगा, और अंततः, वह शांति का अपना राज्य लाएगा। योएल के दिनों के लोग आशा और प्रत्याशा के साथ उस वादे की प्रतीक्षा कर सकते थे, और हम भी ऐसा ही कर सकते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों से किए गए वाचा के वादों और उद्धार के इतिहास के लिए परमेश्वर के डिजाइन और शांति के राज्य के लक्ष्य के प्रति वफादार है जिसका उसने वादा किया है। परमेश्वर के पास उन चीजों को लाने की शक्ति, क्षमता और संप्रभुता है।

हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। हम परमेश्वर के वादों पर भरोसा रख सकते हैं।

यह डॉ. गैरी येट्स की 12 की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह योएल की पुस्तक पर सत्र 29 है।